

० गीतु ०

आई आई विपिन से वाधाई, आये कुशल से रघुराई।

भरत लाल ढिंग महावीर आये,

तेरे सुवन सुख संदेश लाये, संदेश लाये।

दर्द दीवानी कौशल्या माई, आये कुशल से० ॥१॥

निज बाहुँ बल से निशाचर सँघारे,

सुर नर मुनि के भय भार टारे, भय भार टारे।

भक्तों के प्यारे संतनि सुखदाई, आये कुशल से० ॥२॥

पुष्प विमान पै सियाराम प्यारे,

भ्राता लखन सह नैनो के तारे, नैनों के तारे।

जस की जगत में ध्वजा फहराई, आये कुशल से० ॥३॥

मिठी राम जननी दुख को भुलाओ,

लालन मिलन का हर्ष बढ़ाओ, हर्ष बढ़ाओ।

श्री रंग तेरी आशा पुज़ाई, आये कुशल से० ॥४॥

सागर विरह का सूख चला है,

चमन खुशी का फूला फला है, फूला फला है।

अँधेरा मिटा अब चांदनी छाई, आये कुशल से० ॥५॥

सभी रंजो गम के बीते ज़माने,

आई बहारें भये शादमाने, भये शादमाने ।

बूढ़ी बसस भये सतिगुर सहाई, आये कुशल से० ॥६॥

पूरे हुए तेरे अरमान सारे,

देते मुबारक है चान्द सितारे, चान्द सितारे ।

सुर मुनि गगन में जय धुनि मचाई, आये कुशल से० ॥७॥

जीवन की नौका लगी है किनारे,

भये हैं खेवैया महादेव प्यारे, महादेव प्यारे ।

मैया मोद में दुग्ध धारा बहाई, आये कुशल से० ॥८॥

सियाराम मैया गले से लगाए,

कर शीश धर के आशीर्षे सुनाए, आशीर्षे सुनाए ।

मैगसि मुबारक की झड़ियां लगाई, आये कुशल से० ॥९॥